श्री. कृष्णकांत पाटील
एम.ए.,पीएच.डी.
प्राचार्य,
कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय,
नेसरी, ता. गडहिंग्लज,
जि. कोल्हापुर.

प्रमाणपत्र

मैं प्रमाणित करता हूँ कि, कु. विजयादेवी श्रीकांत घोरपडे ने शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर की एम. फिल्. (हिंदी) उपाधि हेतु प्रस्तुत शोध प्रबंध 'कबीर जीवन पर आधारित नाटकों में चित्रित सामाजिक संदर्भ'' मेरे निर्देशन में बड़े परिश्रम के साथ सफलतापूर्वक पूरा किया है। जो तथ्य प्रबंध में प्रस्तुत किये गए हैं, मेरी जानकारी के अनुसार सही हैं। मैं इनके शोधकार्य से पूरी तरह संतुष्ट हूँ। यह रचना इससे पहले शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर या अन्य किसी विश्वविद्यालय की उपाधि के लिए प्रस्तुत नहीं की गई है।

स्थान : गडहिंग्लज.
दिनांक : 27 दिसंबर, 2007.

शोध निर्देशक,
(डॉ. कृष्णकांत पाटील)

श्री. अर्जुन गणपति चव्हाण
एम.ए.,बी.एड्.,पीएच. डी.

प्रपाठक एवं अध्यक्ष,
हिंदी विभाग,
शिवाजी विश्वविद्यालय,
कोल्हापुर.

संस्तुति

मैं संस्तुति करता हूँ कि, कु. विजयादेवी श्रीकांत घोरपडे द्वारा एम. फिल्. (हिंदी) उपाधि हेतु प्रस्तुत "कबीर जीवन पर आधारित नाटकों में चित्रित सामाजिक संदर्भ" शोध प्रबंध परीक्षणार्थ अग्रेषित किया जाय।

स्थान : कोल्हापुर.

तिथि : 27 दिसंबर, 2007.

27/12/07

(डॉ.अर्जुन गणपति चव्हाण)
Head
Dept. of Hindi,
Shivaji University
Kolhapur-416004

प्रख्यापन

प्रस्तुत लघु शोध प्रबंध मेरी मौलिक रचना है जो एम. फिल्. (हिंदी) उपाधि के लिए प्रस्तुत की जा रही है। यह रचना इससे पहले शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर या अन्य किसी विश्वविद्यालय की उपाधि के लिए प्रस्तुत नहीं की गई है।

स्थान : गडहिंग्लज.

तिथि : 27 दिसंबर, 2007.

शोध छात्रा,

Ghorpade V.S.

(कु.विजयादेवी श्रीकांत घोरपडे)

प्राक्कथन

विषय चयन की प्रेरणा -

नाटक विधा सब विधाओं में श्रेष्ठ है क्योंकि नाटकों के द्वारा साधारण से साधारण तथा गूढ़ से गूढ ज्ञान रंगमंच पर अभिव्यक्त किया जा सकता है। नाटक में नृत्य, काव्य तथा संगीत आदि कलाओं की रसात्मक अभिव्यक्ति होती है। नाटक के विविध गुणों की वजह से साहित्य की अन्य विधाओं की अपेक्षा इसका प्रत्यक्ष प्रभाव समाज के विविध वर्गोंपर एक साथ ही पाया जाता है। नाटक की महत्ता इस प्रकार है कि, बालक, वृद्ध, स्त्री, पुरूष, पढ़े–लिखे, अनपढ़ आदि सभी इसकी अनुभूति से लाभान्वित होते हैं। इसलिए श्रेष्ठ साहित्यिक साहित्य की अन्य विधा की अपेक्षा नाटक विधा का ही अधिक उपयोग करते हैं। साहित्य की सभी विधाओं में नाटक श्रेष्ठ होने की वजह से मुझे इस विधासे अधिक लगाव है। इसलिए मैंने अध्ययन के लिए नाटक विधा का चयन किया है।

विषय चयन का महत्व -

कबीर मध्यकालीन भारत का सशक्त व्यक्तिमत्व रहा है। उनके व्यक्तित्व का आज के समाज पर ही नहीं साहित्यकारों पर भी प्रभाव दिखाई देता है। साहित्यकार समाजसुधारक होते हैं और अपनी इस उद्देश्यपूर्ति के लिए आज भी वे कबीर जैसे व्यक्तित्व की अपेक्षा करते हैं। इस प्रकार की चाह रखनेवाले नाटककारों में मणि मधुकर, भीष्म साहनी और नरेंद्र मोहन आदि का समावेश हैं। ये तीनों नाटककार अल्पावधि में ही अपनी अलग पहचान बनानेवाले प्रतिभाशाली एवं बहुचर्चित नाटककार माने जाते हैं। इन्होंने अपने नाटकोंद्वारा समाज के विविध घटक तथा समाज में व्याप्त विविध समस्याओं का समाधान प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। इन तिनों नाटककारों के 'कबीर' को केंद्र में रखकर लिखे गए नाटकों को पढ़ने के पश्चात यह ज्ञात हो जाता है कि, कबीरकालीन जीवन, परिवेश तथा उनमें व्याप्त समस्याओं का कबीरद्वारा प्रखर

संघर्ष आदि के नाटककारों ने सामाजिक यथार्थता के साथ प्रस्तुत किया है। इन नाटकों में जीवन के कटु सत्यों के दर्शन होते हैं। 'इकतारे की आँख', 'कबिरा खडा बजार में' तथा 'कहै कबीर सुनो भाई साधो' इन नाटकों में समाज की वास्तविकता का चित्रण केया गया है। विशेषत: महत्वपूर्ण बात यह है कि इस विषय पर इस प्रकार का समन्वित अनुसधान अबतक उपलब्ध नहीं है। मेरा शोध इसी अभाव पूर्ति का विनम्र प्रयास है।

''कबीर जीवन पर आधारित नाटकों में चित्रित सामाजिक संदर्भ'' इस विषय को लेकर आज तक अध्ययन नहीं हुआ है। उस कमी की पूर्ति के उद्देश्य से यह विषय लेकर प्रस्तुत लघु शोध प्रबंध की रचना की गई है।

अनुसंधान के प्रारंभ में उत्पन्न प्रश्न -

कबीर जीवन पर आधारित 'इकतारे की आँख', 'कबिरा खड़ा बजार में' और 'कहै कबीर सुनो भाई साधो' इन नाटकों का अध्ययन करते समय मेरे मन में निम्न सवाल खड़े हुए–

1. मणि मधुकर, भीष्म साहनी तथा नरेंद्र मोहन जी ने अपने नाटकों के विषयों का किस प्रकार परिचय दिया है?
2. इन नाटकों में कबीर का व्यक्तित्व किस प्रकार चित्रित हुआ है?
3. विवेच्य नाटकों में समाज जीवन के कौन–कौन से संदर्भ प्रतिबिंबित हुए है?
4. कबीर जीवन पर आधारित नाटकों में कौनसी धार्मिक समस्याओं का चित्रण मिलता है?
5. कबीर जीवन पर आधारित नाटकों में राजनीति की किन समस्याओं पर प्रकाश डाला गया है?

अध्ययन की सुविधा के लिए मैंने लघु शोध प्रबंध को पॉच अध्यायों में विभाजित कर विषय का विवेचन और विश्लेषण किया है –

- **प्रथम अध्याय : 'कबीर जीवन पर आधारित नाटकों का सामान्य परिचय'**

  प्रस्तुत अध्याय में नाटककारों का सामान्य परिचय तथा उनके द्वारा रचित नाटकों की कथावस्तु का सामान्य परिचय प्रस्तुत किया है और अंत में निष्कर्ष दिया है।

- **द्वितीय अध्याय : 'विवेच्य नाटकों में चित्रित कबीर का व्यक्तित्व'**

  प्रस्तुत अध्याय में कबीर के व्यक्तित्व को स्पष्ट करते हुए उनके व्यक्तित्व के बेपरवाही, दृढता, नीडर प्रवृत्ति, निर्भय आलोचक, समाज सुधारक तथा पथप्रदर्शक कबीर आदि विभिन्न पहलुओं को स्पष्ट किया गया है। अध्याय के अंत मे प्राप्त निष्कर्ष दिया है।

- **तृतीय अध्याय : 'विवेच्य नाटकों में चित्रित सामाजिक संदर्भ'**

  प्रस्तुत अध्याय में जाति–पाँति की समस्या, स्त्री–पुरूष संबंध, नारी का सामाजिक स्थान, अज्ञान, निरक्षरता, अंधश्रद्धा तथा सामाजिक कुप्रथा आदि सामाजिक समस्याओं का विवेचन किया है और अंत में निष्कर्ष दिया है।

- **चतुर्थ अध्याय : 'विवेच्य नाटकों में चित्रित धार्मिक संदर्भ'**

  प्रस्तुत अध्याय में धर्म के नामपर आनेवाली विविध समस्याओं का विवेचन कथा के आधारपर किया है; जैसे, धर्म का योथापन, साधुओं की भ्रष्टता, धार्मिक आडंबरों का बोलबाला, पंडित मुल्लाओं धर्म के ठेकेदारो की ज्ञानहीन अध आस्था आदि। अंत में प्राप्त निष्कर्ष दिया है।

- **पंचम अध्याय : 'विवेच्य नाटकों में चित्रित राजनीतिक संदर्भ'**

  प्रस्तुत अध्याय के अंतर्गत राजनीति में आनेवाली समस्याओं का कथा के आधार पर विवेचन किया गया है। जैसे, राजनीति एवं राजनेता, राजनीति का

सामाजिक अंगोंपर प्रभाव, प्रशासक वर्ग, प्रशासकों का अत्याचार, शोषण, शासकीय प्रतिनिधियों की अय्याशी तथा भ्रष्ट न्याय व्यवस्था आदि। अंत में प्राप्त निष्कर्ष दिए गए है।

उपसंहार -

उपर्युक्त सभी अध्यायों के निष्कर्षो के सार रूप में उपसंहार में प्रस्तुत किया है। अत में संदर्भ ग्रंथ सूची संलग्न है।

ऋणनिर्देश

प्रस्तुत शोध प्रबंध की पूर्ति में मेरी प्रत्यक्ष–परोक्ष रूप से सहायता करनेवाले गुरूजनों, हितचिंतकों के प्रति कृतज्ञता प्रकट करना मैं अपना कर्तव्य समझती हूँ।

मेरे निर्देशक डॉ. के. आर. पाटील जी के बहुमोल निर्देशन की यह फलश्रुति है। उनके उदार एवं आत्मीय मार्गदर्शन से ही मैं इस शोध–कार्य की मंजिल तक पहुँच सकी हूँ। आपके प्रति अपनी कृतज्ञता शब्दों में प्रकट करना मेरे लिए संभव नहीं है। इस मार्गदर्शन के लिए मैं उनकी सदा ऋणी रहूँगी।

श्रद्धेय गुरूवर्य हमारे हिंदी विभागाध्यक्ष डॉ. अर्जुन चव्हाण, डॉ. पांडूरंग पाटील आदि के समय समय पर प्राप्त मार्गदर्शन, मेरी जिज्ञासा एवं उम्मीद बढ़ाता रहा। इन सभी की मैं आभारी हूँ।

इस लघु शोध–प्रबंध की पूर्ति में मेरी माता गीता, पिता श्रीकांत, भाई उदयसिंह सभी बराबर के हिस्सेदार हैं। उनके आशीर्वाद तथा प्रोत्साहन से ही मैं यह शोधकार्य पूरा कर सकी हूँ। उनके चरणों में मेरा यह संकल्प सादर अर्पित है।

इस अवसर पर मेरे मित्र डॉ. प्रकाश साळवी और स्नेही प्राचार्य श्री. हिंदुराव रामचंद्र घरपणकर (राजीव गांधी शिक्षा महाविद्यालय, धारवाड) और प्रा. सौ. सुगंधा हिंदुराव घरपणकर (राजा शिवछत्रपती कला, वाणिज्य महाविद्यालय, महागांव) इन्होंने मेरी हमेशा सहायता कर अनुसंधान कार्य को गतिशील बनाए रखने के लिए निरंतर प्रोत्साहन दिया है।

शिवाजी विश्वविद्यालय के ग्रंथपाल तथा शिवराज महाविद्यालय के ग्रंथपाल एवं उन सभी कर्मचारियों के प्रति मैं कृतज्ञ हूँ, जिन्होंने मुझे प्रत्यक्ष–परोक्ष रूप से सहाकार्य किया। इस लघु शोध–प्रबंध का टंकन संतोष गणपती नरेवाडे (गडहिंग्लज) ने बड़ी लगन से किया है। अत: मैं उनकी आभारी हूँ।

अंत में सभी गुरूजनों, सहृदयों एवं आत्मजनों की प्रेरणा तथा सदिच्छाओं के लिए पुनश्च धन्यवाद ।

(कु. विजयादेवी घोरपडे)